such occasions, always try to ride the other's horse. If you want to be so vigilant, why do you always keep looking to the other side?

Mr. Dhamankar.

13.11 hrs.

RE. REPORTED RISE IN PRICES OF COTTON AND NYLON YARNS

SHRI DHAMANKAR (Bhiwandi): The prices of cotton yarn, nylon yarn and all synthetic types of yarn are rising by leaps and bounds in the Bombay market and other centres of this country, after the announcement by the Commerce Minister that the prices of cotton yarn will be controlled and it will be distributed through government-sponsored agency. Now the dealers of Bombay and other centres in the country are hoarding this yarn, and handloom and power-loom owners are not in a position to get yarn in the market. There has been a price rise of nearly 200 to 300 per cent. The dealers of cotton yarn are now cornering all nylon yarn and synthetic yarn in the market. The handloom weavers and power-loom weavers are rendered jobless and they are on the starvation point. Acute unemployment has been created. I would urge on the Government to freeze all the stocks of cotton yarn, nylon yarn and other man-made yarn with the dealers and cotton mills, spinners, etc., till the Government implements the scheme of distribution through government-sponsored agency.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर): फरीदाबाद मेडिकल कालेज के बारे में आज हेल्थ मिनिस्टर को बयान देना था, सात दिन हो गये हैं।

अध्यक्ष महोदय : तो अब मैं क्या करूं ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप मंत्री महोदय को पकड़ कर बुलवा सकते हैं। आप मार्शल को भेज कर मिनिस्टर साहब को बुलवाइये, सात दिन हो गये हैं।

अध्यक्ष महोदय : मुझे पता नहीं अभी कितने दिन पूरे होने हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह मामला बहुत गम्भीर है। लड़के लड़कियां भूख हड़ताल पर बैठे हैं। उनको पटना भेज रहे हैं। आप मंत्री महोदय को कहिये वह बयान दें।

अध्यक्ष महोदय : इसके बारे में थोड़ा सा आप भी इन्ट्रेस्ट लेते। उस दिन मैं उठकर खाडिलकर साहब के यहां ही चला गया। इसमें कई बातें ऐसी हैं जिसमें थोड़ी सी देर लग रही है। वह बात कर रहे हैं आपस में। किसी की बंसी किसी के सिर आती होती है तो मौका देना चाहिए कि वह उसको उठा ले।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मंत्री महोदय यहां आकर कहें कि और समय चाहिए तो हम समय दे देंगे।

अध्यक्ष महोदय : वह डरते हैं आप उनके पीछे न पड़ जायें। आज मैं फिर कहूंगा। . . (व्यवधान) . . मुझे पता है दिल से वह बड़ी कोशिश कर रहे हैं, इतना मैं कह सकता हूं।

श्री शारदानन्दे राय (धोसी) : एक हरिजन की हत्या के बारे में मैंने सवाल दिया था।

अध्यक्ष महोदय : हरिजन की हत्या हुई है तो मुझ को लिख कर दीजिये। इस वक्त मेरे पास समय नहीं है। मैं देख लूंगा।

श्री शारदानन्दे राय : मैं ने कल दे दिया है।

अध्यक्ष महोदय : फिर किसी तरह से एक्सेप्ट नहीं हुआ है। मैं देखूंगा क्या बात है। एक तो आता नहीं, पचासों आते हैं।